द्वितीय अध्याय

मुगल कालीन राजनीतिक परिस्थितियाँ

द्वितीय अध्याय

भूषण - कालीन राजनीतिक परिस्थितियाँ —

कोई भी युग अपने युग की परिस्थितियों से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। हर एक युग का साहित्य जिस प्रकार उस काल की परिस्थितियों से प्रभावित होता है, उसी तरह वहाँ की साहित्यिक प्रवृत्ति भी तत्कालीन परिस्थिति को प्रभावित करती है। कवि भूषण रीतिकाल के कवि हैं। रीतिकालीन साहित्य में सं.१७०० से लेकर सं.१९०० तक की परिस्थितियाँ मुखरित हो उठी हैं। परिस्थितियों के अनुसार साहित्य के क्षेत्र में परिवर्तन होता है। साहित्यिक धाराएँ और उसकी प्रवृत्तियाँ तत्कालीन परिस्थिति के अनुसार मोड लेती है। और बाद में उन्हीं विशिष्ट परंपराओं का विकास होता है। कवि भूषण के काल में जो प्रवृत्तियाँ और विशेषताएँ पायी जाती हैं, उनका प्रधान कारण तत्कालीन परिस्थितियाँ हैं।

कवि भूषण के समय में भारत का राजनीतिक इतिहास मुगल साम्राज्य से संबंध रखता है। उस समय उत्तर भारत की केंद्रीय सत्ता मुगलों के हाथों में थी। औरंगजेब ने बादशाहत पाने के लिए अपने पिता शाहजहाँ को बंदी बनाया और दारा को पकडकर मार दिया। दारा औरंगजेब की माँ का सगा भाई था, फिर भी उस पर दया नहीं दिखायी। औरंगजेब ने कुरान की कसम खा कर मुराद को अपने पक्ष में मिलाया और उसे भी छल से कैद कर मरवा दिया।[१] इसी तरह से औरंगजेब ने शाह शुजा को युध्द से पराङ्मुख कर भगा दिया था। इसप्रकार उसने अपने अनेक सगे संबंधियों की हत्या कर दी थी। इतने अनर्थ करने के बाद औरंगजेब को राजसिंहासन मिला था।

मुगल शासन अकबर जहाँगीर और शाहजहाँ की पीढियों को पार करके सारे भारत देश में अपनी जडें अच्छी तरह से जमा चुका था। मुगल साम्राज्य का

विस्तार उस समय चरम उत्कर्ष पर रहा । औरंगजेब की साम्राज्य-विस्तार की इच्छा दिन-ब-दिन बढ़ती ही गई । वह बड़ा धर्मान्ध,कट्टर सुन्नी मुसलमान था । उसकी धार्मिक कट्टरता की नीति और अमानुषिक व्यवहारों से अनेक देशी नरेश और हिंदू जनता विक्षुब्ध हो उठी थी।शक्तिशाली मुगल साम्राज्य ने अपना राज्य प्रस्थापित किया था । बाद में वह अवनति की ओर जाने लगा, क्योंकि औरंगजेब की नीति कट्टर धार्मिक नीति थी । इसी नीति के कारण उसे अनेक विद्रोहों का सामना करना पड़ा । उसे मराठों और सिक्खों से चिरकाल तक लोहा लेना पड़ा । औरंगजेब का जीवन जाटों, सतनामियों,छत्रसाल,राजपूतों और मराठों से संघर्ष करते - करते ही बीता था ।[२]

औरंगजेब की उत्तर प्रांतों में तीन-तीन बार पराजय और दक्षिण प्रांतों के आक्रमक उपद्रवों के कारण जन-जीवन की हानि हुई,जिससे मुगल साम्राज्य की प्रतिष्ठा को भारी धक्का लगा । स्थान-स्थान पर शक्तिशाली क्षेत्रीय शासन कायम हो गये थे । औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात सभी क्षेत्रीय शासक प्रबल हो गये । उस समय राजनीतिक स्थिति अत्यंत कठिन तथा शोचनीय हो गयी थी । डॉ.शिवकुमार शर्माजी के अनुसार -`राजनीति की दृष्टि से इस काल को घोर निराशा और अंधकार का युग समझाना चाहिए ।`[३]

औरंगजेब के उत्तराधिकारी एकदम अयोग्य,असमर्थ,विलासी एवं पंगु सिध्द हुए थे । ऐसे समय में सन १७३९ में नादिरशाह का और सन १७६१ में अहमदशाह अब्दाली का आक्रमण हुआ । इन आक्रमणों ने दिल्ली के केंद्रीय शासन को बिलकुल क्षीण कर दिया था । औरंगजेब के समय में अनेक सामंतों और छोटे-छोटे शासकों के भी राज्य थे । उनके अनेक हरमों में असंख्य रक्षिताएँ और नर्तकियाँ भी थीं । औरंगजेब को संगीत,साहित्य,कला,सौंदर्य ,ऐश्वर्य तथा विलासिता के प्रति घोर चिढ़ थी । उसने इन बातों के निषेध संबंधी सरकारी फरमान भी जारी किये, लेकिन इनका बंद होना मुश्किल हो गया था । औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात अनेक प्रदेशों के शासक स्वतंत्र हो गए । उत्तराधिकारी स्वतंत्र होने से शासन-व्यवस्था असमर्थ और अयोग्य प्रतीत होने लगी ।

जाटों, राजपूतों और बंदाबैरागी ने बहादुरशाह और फर्रुखसियर को बुरी तरह से बेचैन कर दिया था। दक्षिण में मराठा शक्ति पूर्णतया प्रबल हो चुकी थी। अंग्रेजों ने बक्सर की लडाई में शाह आलम में पूरी तरह से पराजित करके मुगल शासन की इतिश्री कर दी थी।[४] इसप्रकार औरंगजेब के उत्तराधिका - - रियों की आर्थिक स्थिति भी दयनीय हो गयी थी। केंद्रीय मुगल शासन जैसा क्षीण होता गया वैसे देश के विभिन्न भागों में छोटे-छोटे शासक प्रबल और कायम होते गए। वे अपने स्थानों पर स्वच्छंदता के साथ शासन कर रहे थे, लेकिन इन राजाओं में परस्पर संगठन और मेल नहीं था। इनमें पारस्परिक संघर्ष और मनमुटाव चलता था। छोटी-छोटी बातों पर भी रुष्ट होकर युध्द होते रहते थे। इसप्रकार कवि भूषण के काल में राजनीतिक वातावरण बहुत अस्थिर और तंग था।

औरंगजेब का उत्तराधिकारी सम्राट जहाँदाराशाह को एक कवि ने केशों का पुजारी कहा है। वह लालकुँवर वेश्या पर बहुत आसक्त हुआ था। लालकुँवर के संकेतों पर सारा राज्य चलता था। जनसामान्य पर मनमाने अत्याचार होते थे। इन परिस्थितियों के संबंध में प्रसिध्द इतिहासकार अलबरुनी वर्णन करते हैं कि --

` गिद्धों के नीड में उल्लू रहने लगे और बुलबुलों के स्थान कौओं ने लिये।`[५]

कवि भूषण के काल में ऐसे अस्थिर राजनीतिक वातावरण का परिणाम सामाजिक परिस्थिति पर भी हो गया था। राजनीतिक वातावरण के कारण ही सामंतशाही शासन का जन्म हुआ था। हर एक शासक अपनी-अपनी जिंदगी, सत्ता और संपत्ति की रक्षा करने के लिए निरंतर जागरुक रहता था। प्रत्येक शासक अपनी तथा जनता की रक्षा के लिए बडे-बडे किले बनवाता था।

` यथा राजा तथा प्रजा ` इस उक्ति के आधार पर इस काल के समाज की स्थिति थी। मुगल वंश के ऐश्वर्य तथा वैभव में विलासिता की प्रधानता प्रारंभ से ही थी। शाहजहाँ और जहाँगीर की वैभवप्रियता, विलासिता तथा प्रदर्शन प्रवृत्ति को देखकर तत्कालीन सामंतीय जीवन को हम परख सकते हैं। समाज का बौध्दिक स्तर बहुत निम्न श्रेणी का हो गया था। अनेक छोटे-मोटे सामंतों के पास रखेलियाँ

की भरमार थी। अकबर, जहाँगीर तथा शाहजहाँ की अनेक पत्नियाँ थीं। इस काल में नारी को केवल मनोरंजन और विलास की सामग्री समझा जाता था। सामंतीय जीवन में द्यूत-क्रीडा और मद्यपान का बहुत प्रचलन था।

उस समय समाज में राजा का स्थान ईश्वर जैसा माना जाता था। समाज में चार वर्ग प्रचलित थे - पहले वर्ग में बादशाह आते थे। इनका स्थान इस व्यवस्था में सर्वोच्च माना जाता था। दूसरे वर्ग में अमीर-उमराव, छोटे राज्यों के राजा तथा वे अधिकारी आते हैं, जिन्हें विभिन्न प्रांतों के अधिकार मिले थे। इन लोगों की स्थिति सर्वसाधारण से भिन्न थी। इनको अनेक अधिकार प्राप्त थे।[६] इन दो वर्गों के लोग विलासपूर्ण जीवन जीते थे। तीसरे वर्ग में शासित, शोषक तथा शोषित, कवि, कलाकंत लोग आते हैं। ये दो विभिन्न वर्गों में और विभिन्न संस्कारों में पले हुए थे। चौथा वर्ग श्रमिकों का था। इनका जीवन दीनता तथा हीनता से भरा हुआ था। भयंकर अकाल और महामारी ने इस निम्न वर्ग का जीवन असहाय कर दिया था। इन लोगों को तन ढँकने के लिए कपडा भी कठिनता से प्राप्त होता था। कला - कौशल और व्यापार को राजाओं की ओर से प्रोत्साहित होना पडा। किसान, व्यापारी तथा अन्य लोगों को स्वयं भूखे मरकर राजा तथा बादशाह की विलासिता की सामग्री पूरी करनी पडती थी। इसप्रकार समाज का जीवन भयंकर विषमता से ग्रस्त, दुर्दशापूर्ण और दयनीय था।

इस काल में शासकों का वैभव-विलास देवराज इंद्र के वैभव-विलास के समान था। राजपरिवार के लोग साहित्य, संगीत, नृत्य तथा वाद्यों के माध्यम से मनोरंजन करते थे। मुगल महिलाएँ पर्दा प्रथा के कारण घर के बाहर नहीं आती थीं। वे बडे-बडे प्रासादों में रहती थीं। विविध अलंकारों के बोझ से उनके शरीर शिथिल रहते थे। वे पंखा झलाती थीं, सुख से जीती थीं। मुगल महिलाएँ कठिन प्रसंगों में अपने पतियों को सलाह भी देती थीं, परंतु वे ही स्त्रियाँ शत्रु के आक्रमण के समय जंगल जंगल भटकती थीं। भूखी मरती थीं और वस्त्रहीन अवस्था में कडाके की ठण्ड में ठिठुरती रहती थीं।[७]

इस समय में सारे देश में हिंदु और मुसलमान शासकों में ईर्ष्या, द्वेष, कलह

और फूट फैली थी, इसलिए हिंदु और मुसलमानों में ही नहीं, हिंदु और हिंदु शासकों में भी युध्द होते थे। युध्द का प्रमुख कारण जर, जोरु और जमीन था। कभी-कभी शक्ति-प्रदर्शन के लिए भी युध्द होते थे। युध्द में भीषण रक्तपात होता था। युध्द समाप्ति के बाद विजेता शासक शत्रु-प्रदेशों को लूटते थे। शत्रु-स्त्रियों का अपहरण किया जाता था, उन पर बलात्कार किये जाते थे। मध्यम और निम्न वर्ग की दशा इतनी दयनीय बन गयी थी, कि उन्हें जीवन-यापन करना मुश्किल हो गया था।

लोग जादूटोने पर विश्वास करते थे। उनमें अंध-विश्वास तथा रूढियाँ घर कर बैठी थीं। ज्योतिषियों की वाणी, शकुन-शास्त्र तथा सामुद्रिक शास्त्र पर लोगों का अगाध विश्वास था। जनता अशिक्षित होने के कारण उसमें नागरिकता का पूर्ण अभाव था। जनता में बाल-विवाह और बहु-विवाह की प्रथाएँ थीं। जनता में विलासिता की प्रधानता होने के कारण सर्वत्र सुंदर दासियों की माँग बढ रही थी। इसी कारण सभ्यता का और संस्कृति का -हास हो रहा था। हिंदु और मुसलमानों का भी ज्योतिषियोंकी भविष्यवाणी में विश्वास था। पीर फकीरों, साधुओं तथा संतों में दोनों को भी अगाध विश्वास था। हर एक वर्ग के लोग अंध-विश्वास में डूब गये थे। हिंदु और मुसलमान दोनों भी धर्मात्मा पुरुषों के स्मारकों की पूजा करते थे। सभी वर्ग नरपूजा की हीन प्रवृत्ति को मानते थे।[९]

इस युग की प्रमुख सामाजिक प्रथाएँ सती, बालविवाह और दहेज आदि थीं। हिंदु लोगों के प्रमुख त्यौहार होली, दशहरा, दिवाली के वक्त वे सुंदर आभूषण धारण करते थे, और परस्पर प्रीतिभोज देते थे। मुसलमान लोग भी हिंदुओं के समान ईद, बकरीद, और मुहर्रम के समय विविध आयोजन करते थे। इस समय में जाति-पाँति का भेद और छुआछूत की प्रथा भी थी। इसप्रकार समाज में अनेक सामाजिक रूढियाँ तथा प्रथायें प्रचलित थीं।

सामंतशाही का जन्म राजनीतिक परिस्थिति से होने के कारण राजनीतिक परिस्थिति के समान सामाजिक परिस्थिति भी चिंताजनक थी।

जिसप्रकार राजनीतिक वातावरण का परिणाम समाज पर हुआ, उस प्रकार

धर्म पर भी उसका प्रभाव पडा था। समाज और राजा की स्थिति जहाँ डावाँडोल थी, वहाँ धर्म भी दयनीय अवस्था में फँस गया था। विद्वान,मौलवी और पंडित जो शास्त्रीय धर्म का अध्ययन-अनुसरण कर रहे थे, वे भी इस युग में अंधविश्वास, रूढियाँ और बाह्य-आडंबरों में जी रहे थे। धर्म का स्थान मिथ्या विश्वास ने ग्रहण किया था। जनता के लिए पंडित और मौलवी के कथन वेद-वाक्य तथा कुरान बन गये थे।[१०]

औरंगजेब हिंदुओं से तो नफरत करता ही था किंतु दक्षिण भारत के सिवा मुसलमान शासकों पर भी उसकी कुदृष्टि थी। सिंहासनासीन होते ही उसने सबसे पहले हिंदुओं पर धार्मिक अत्याचार शुरु किए। वह बडा धर्मांध कट्टर सुनी मुसलमान होने के कारण उसने वेद और पुराणों का नाश किया और रामनाम लेनेवाले हिंदुओं पर अमानुषिक अत्याचार करना शुरु किया। उसने हिंदुओं की चोटियाँ काट दीं, और उनके यज्ञोपवीत और मालाएँ खंडित कर डालीं।[११] उसकी आज्ञा से प्रेरित होकर मुगल सैनिक हिंदु जनता पर अत्याचार करते थे। उसने हिंदु मंदिरों को गिरवाने के लिए देशव्यापी फरमान जारी किया था। हिंदुओं पर उसने भारी तीर्थ-कर लगाये थे, कि जिससे हिंदु अपना धर्म छोडकर मुस्लिम धर्म स्वीकारें। औरंगजेब की यह नीति देखकर कई हिंदु नरेश मसजिद नष्ट करने तथा काजी और कुरान को भ्रष्ट करने के लिए क्रोधित हो उठे थे।

औरंगजेब ने हिंदुओं के माथे का तिलक भी मिटाना शुरु किया था। मंदिरों को ढहाकर इस्लाम धर्म का झंडा फहराया जाता था। उसने काशी का विश्वनाथ का मंदिर गिराकर मथुरा में भी मसजिद बाँधी थी। ऐसे अवसर पर छत्रपति शिवाजी ने हिंदुओं का धर्म-परिवर्तन अपनी तलवार से रोका था। हिंदु और मुसलमान धर्मों के लोगों में अन्य धर्म के प्रति जो दृष्टिकोन था, वह अधिकांशत: सहिष्णु ही था। लेकिन इसमें बाधा लाने का काम राजनीतिक स्वार्थ की भावना ने किया था।[१२]

सूरदास के व्दारा कृष्ण और राधा की मधुरा भक्ति में विलासिता आने लगी। वह विलासिता, शृंगार और अभिव्यक्ति का साधन बन गयी। मंदिरों और मठों के पुजारी वासना के जीवन में डूब गये थे। लोगों की भक्तिभावना के साथ

परकिया भाव को भी प्रोत्साहन मिला था। लोक रक्षक, मर्यादापुरुषोत्तम राम तथा आदर्श मूर्ति सीता एक विलासप्रिय सामान्य रमणी के रूप में चित्रित हुई थी। निर्गुण भक्तिशाखा के अनेक संप्रदायों पर भी इस युग की विलासप्रियता का प्रभाव रहा। तत्कालीन संप्रदाय में ऐंद्रिय शृंगार के कारण नखशिख-वर्णन और नायिका वर्णन आदि का समावेश होने लगा।[13] इसप्रकार धर्म के नाम पर अधर्म ही बढता रहा था।

लोगों में धार्मिक अंधविश्वास बढ गया था। मनोरथों की सिध्दि और परलोक सुधारने की भावना से अनेक धार्मिक साधनों का प्रयोजन किया जाता था। ईश्वर, गंगा और खड्ग आदि की शपथ लेने का प्रचलन था। इन शपथों का प्रयोग राजनीतिक छल में धूर्तता से किया जाता था। इसप्रकार कवि भूषण का युग विश्वासों और आस्थाओं का युग था। धर्म के नाम पर केवल विलास और प्रदर्शन की प्रवृत्ति चल रही थी। विलास की प्रधानता के कारण भक्ति की भावना मंद पड गयी थी। धर्मस्थान पापाचार और भ्रष्टाचार के अड्डे बन गये थे। लोगों के लिए बाह्याचरण ही धर्म पालन रह गया था, इसलिए धर्म का नैतिकता के साथ संबंध विच्छिन्न हो गया था।[14] इसप्रकार संस्कृति का -हास होता जा रहा था।

कवि भूषण के समय की आर्थिक परिस्थिति देखने पर समझ में आता है कि राजा और बादशाहों की ही आर्थिक, स्थिति अच्छी थी, क्योंकि तत्कालीन राजकीय आय के स्त्रोत अनेक थे। कला पर जीविकार्जन करनेवाली वेश्या और कवि भी समृध्द थे। कृषी-उद्योग अर्थोपार्जन का प्रमुख साधन था। समाज में धन-धान्य का वैभव संतोषजनक था। समाज में अनेक कुटिरोद्योग भी थे। इनमें वस्त्रोद्योग महत्वपूर्ण उद्योग था। उस समय का मुख्य व्यवसाय मणि-मुक्तादि की खानों के ठेके लेना, और स्वर्ण को शुध्द करने का व्यवसाय था।[15] इसलिए तत्कालीन महल वैभव संपन्न थे। नगरों की दशा व्यापार की दृष्टि से संतोषजनक थी। बाजार में आर्थिक लेन-देन के लिए चाँदी के सिक्के और सोने के होन चलते थे।[16] इसप्रकार वैभव संपन्न परिस्थिति होते हुए भी किसान, व्यापारी और अन्य सामान्य लोगों की स्थिति बहुत ही कठिन थी, क्योंकि उस काल में सामंतशाही-शासन-व्यवस्था

थी। राजा तथा बादशाह विलासिता में डूब गये थे। उनकी विलासिता की सामग्री किसान, व्यापारी और सामान्य जनता को पूरी करनी पड़ती थी। ये लोग स्वयं भूखों मरकर राजा तथा बादशाह की विलासिता की सामग्री पूरी करते थे, इसलिए उनकी आर्थिक स्थिति बहुत ही दयनीय थी।

इसप्रकार राजनीतिक परिस्थिति का प्रभाव सभी क्षेत्रों पर पड़ा था।

निष्कर्ष

कवि भूषण के समय में भारत की केंद्रीय राजसत्ता औरंगजेब के हाथ में थी। उसने धार्मिक कट्टरता की नीति से हिंदुओं पर अमानुषिक अत्याचार किये। हिंदुओं की चोटियाँ काट दीं और उनकी मालाएँ खंडित कर डालीं, इसलिए औरंगजेब को अनेक विद्रोहों का सामना करना पड़ा। उसका सारा जीवन संघर्ष करते करते ही बीता था। उसे विलासिता के प्रति घोर चीढ थी, लेकिन उसके उत्तराधिकारी विलासिता का जीवन जीते थे। उत्तराधिकारी विलासी, अयोग्य और असमर्थ होने के कारण मुगल शासन जीर्ण बन गया।

औरंगजेब की मृत्यु के बाद अनेक प्रांतों ने स्वतंत्रता के लिए प्रयत्न किए और वे स्वतंत्र बन गए। देश के अनेक भागों में छोटे-छोटे शासक स्वच्छंदता से शासन करने लगे। छोटे-शासक स्वतंत्र बन कर भी आपस में संघर्ष करते थे। इस देश में फैले हुए वैमनस्य का लाभ अंग्रजों ने भी उठाया, जिससे मुगल शासन जीर्ण बनकर तंग हो गया। इसप्रकार कवि भूषण के समय में राजनीतिक वातावरण बहुत अस्थिर और तंग बन गया था। ऐसे अस्थिर राजनीतिक वातावरण के कारण सामंतशाही शासन ने जन्म लिया था। इस शासन पध्दति पर सामाजिक जीवन आधारित था। इस शासन पध्दति में तत्कालीन उच्चवर्ग की विलासप्रियता यही एक सामान्य प्रवृत्ति बन गयी थी।

समाज में बहुपत्नी-प्रथा प्रचलित थी। प्रेम, शृंगार और वासना नारी जीवन के अनिवार्य अंग बन गये थे। अमीर-उमराव तथा छोटे राजाओं को अनेक अधिकार प्राप्त होने के कारण वे विलासिता में डूब गये थे। मध्यम और निम्नवर्ग की स्थिति बहुत दयनीय थी। उन्हें जीना मुश्किल हो गया था। गरीब और कमजोर जनता पर मनमाने अत्याचार करना यही शासकों का पुरुषार्थ था। राजपरिवार के लोग अनेक साधनों व्दारा मनोरंजन करके आराम से जिंदगी गुजारा करते थे। शासकों के अमानुषिक अत्याचार से सामाजिक जीवन के रचनात्मक आदर्श समाप्त हो गये थे। समाज का संपूर्ण जीवन एक बंधी हुई परंपरा की धाराओं में बहने लगा था।

हिंदु और मुसलमान शासकों में आपसी फूट और द्वेष से हमेशा युध्द होकर भीषण रक्तपात होता था। विजेता शासक विजित प्रदेशों को लूटते थे। शत्रु-नारियों का भी अपहरण होता था। लोग अशिक्षित होने के कारण उनमें अगाध अंधविश्वास और रूढियाँ थीं। कला-कौशल और व्यापार को राजाओं का मुखापेक्षी रहना पडता था, इसलिए सभ्यता और संस्कृति का -हास हो गया, और उसी के साथ इस युग को महान आर्थिक संकट भी देखना पडा था।

तत्कालीन समाज में भक्ति में भी विलासिता आयी थी। अनेक संप्रदाय भी विलासिता से ग्रस्त हो गये थे। लोगों में अंधविश्वास और रूढियाँ बढने के कारण अनेक धार्मिक साधनों का प्रयोजन परलोक सुधारने के लिए और मनोरथ सिध्दि के लिए करते थे। लोगों में शपथ लेने का भी प्रचलन था। इसप्रकार धर्म के नाम पर अधर्म ही बढ रहा था।

लोगों पर धार्मिक अन्याय और अत्याचार होते थे। धर्म पर आघात होने के कारण लोग मन ही मन विक्षुब्ध और असंतुष्ट थे। अनेक मुसलमान शासकों ने धर्म का प्रचार करते समय धन के लोभ में हिंदु धर्म के प्रतीक मंदिरों और मूर्तियों को तोडा था। लोगों को मजबूर बनकर मुसलमान होना पडता था। अधिकांश हिंदु शासक औरंगजेब के आगे झुक गये थे और अपनी शक्ति का उपयोग हिंदुत्व के नाश और इस्लाम धर्म के प्रचार एवं प्रसार के लिए बडी निष्ठुरता से कर रहे थे।

इस प्रकार कवि भूषण के काल में राजनीतिक वातावरण बहुत अस्थिर होने के कारण इस राजनीति से सामंतशाही - शासन ने जन्म लिया, और इस शासन से विलासिता और शृंगारिकता ने जन्म लिया था। सामंतवाद गरीबों के शोषण से ही पुष्ट हो गया था। सामंतीय वातावरण होने के कारण इस युग में सभी क्षेत्रों में प्रदर्शन - प्रवृत्ति की प्रधानता थी। सामान्य जनता ऐसी राजनीति के प्रति बहुत ही उदासीन थी क्योंकि राजनीति में पवित्रता का स्थान कूटनीति हिंसा और छल ने ले लिया था। यह काल आक्रमणों के आतंक तथा युध्द का काल रहा था। इस प्रकार राजनीतिक वातावरण का प्रभाव सभी क्षेत्रों में दिखायी देता है।

संदर्भ सूची

संदर्भ	ग्रंथ का नाम	लेखक	पृष्ठ	प्रकाशक । प्रकाशन काल
१	शिवा-बावनी	श्री देवचंद्र विशारद	६५	हिंदी भवन, जालंदर और इलाहाबाद । १९६९
२	हिंदी साहित्य का उद्भव और विकास	रामबहोरी शुक्ल मगीरथ मिश्र	२५८	हिंदी भवन, जालंदर और इलाहाबाद ।
३	हिंदी साहित्य: युग और प्रवृत्तियाँ	डॉ. शिवकुमार शर्मा	३२९	अशोक प्रकाशन, नई सड़क दिल्ली-६, १९७७
४	- वही -			
५	- वही -		३३०	- वही -
६	रीतिकालीन साहित्य की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि	डॉ. शिवलाल जोशी	११८	साहित्य सदन, देहरादून । १९६२
७	भूषण (साहित्यिक एवं ऐतिहासिक अनुशीलन)	डॉ. भगवानदास तिवारी	१३१	साहित्य भवन(प्रा.)लि., इलाहाबाद-३, प्रथम संस्करण १४ नवंबर - १९७२
८	संक्षिप्त-भूषण	डॉ. भगवानदास तिवारी	४०	साहित्य भवन(प्रा.)लि., इलाहाबाद-३
९	रीतिकालीन साहित्य की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि	डॉ. शिवलाल जोशी	१३०	साहित्य सदन, देहरादून संस्करण-१९६२
१०	हिंदी साहित्य युग और प्रवृत्तियाँ	डॉ. शिवकुमार जोशी	३३१	अशोक प्रकाशन, नई सड़क दिल्ली-६, सप्तम संस्करण, १९७७

संदर्भ क्र.	ग्रंथ का नाम	लेखक	पृष्ठ	प्रकाशक । प्रकाशन काल
११	भूषण(साहित्यिक एवं ऐतिहासिक अनुशीलन)	डॉ.भगवानदास तिवारी	१२०	साहित्य भवन(प्रा.)लि., इलाहाबाद-३,१४ नवम्बर १९७२
१२	हिंदी वीर-काव्य में सामाजिक जीवन की अभिव्यक्ति	डॉ.राजपाल शर्मा	३३०	आदर्श साहित्य प्रकाशन दिल्ली-३१,प्रथम संस्करण, १९७४
१३	हिंदी साहित्य: युग और प्रवृत्तियाँ	डॉ.शिवकुमार शर्मा	३३१	अशोक प्रकाशन,नई सड़क दिल्ली-६,सप्तम संस्करण १९७७
१४	हिंदी साहित्य: युग और प्रवृत्तियाँ	डॉ.शिवकुमार शर्मा	३३२	अशोक प्रकाशन,नई सड़क, दिल्ली-६
१५	हिंदी वीर काव्य मे सामाजिक जीवन की अभिव्यक्ति	डॉ.राजपाल शर्मा	३४६	आदर्श साहित्य प्रकाशन, दिल्ली-३१,प्रथम संस्करण १९७४
१६	भूषण : (साहित्यक एवं ऐतिहासिक अनुशीलन)	डॉ.भगवानदास तिवारी	१२७	साहित्य भवन(प्रा.)लि., इलाहाबाद-३,प्रथम संस्करण-१४ नवम्बर १९७२